

Tripur Bhairvi Sadhna



श्री त्रिपुर भैरवी

5. त्रिपुर भैरवी साधना

दक्षिणामूर्ति महाशिव कालभैरव की शक्ति भैरवी हैं। छिन्नमस्ता देवी महाप्रलय से सम्बन्धित है तो भैरवी नित्य प्रलय से। प्रतिक्षण प्रलय हो रही है। पदार्थों का नाश हो रहा है। हमारी इन्द्रियां, बल, आयु क्षीण हो रही है। नष्ट करना रुद्र का काम है। यही यम कहलाते हैं। यम व अग्नि की सत्ता दक्षिण दिशा में है। दक्षिण में वास होने से दक्षिणामूर्ति भैरव कालभैरव आदि नामों से पुकारे जाते हैं। राजराजेश्वरी भुवनेश्वरी देवी जिन तीनों भुवनों की रक्षा करती हैं, त्रिपुर भैरवी नाम से भैरवी उनका नाश करती है। छिन्नमस्ता परा डाकिनी है, यह ऊपरा डाकिनी है।

साधक स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजा सामग्री पास रख कर आसन पर बैठें। आत्मशुद्धि आसन-शुद्धि करें। सामने भैरवी माता का चित्र किसी काठ की चौकी पर स्थापित करें और षोडशोपचार, पंचोपचार या मानसोपचार से देवी की पूजा करें। पश्चात् विनियोग, न्यास, ध्यान, कवच पाठ के बाद मन्त्र जप करें। जप से पहले माला की पूजा की जाती है। जो साधक संस्कृत नहीं जानते वे अपनी भाषा में ही पूजा, न्यास आदि कर सकते हैं। मन्त्र व कवच का पाठ मूल रूप में ही होता है। मां भैरवी की पूजा में भी लाल रंग के ही पदार्थों की पूजा सामग्री, माला, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आसन व लाल वस्त्रों का ही प्रयोग होता है। पुष्पों में कमल के पुष्प मिल जाएं तो उत्तम होते हैं, हवन में भी कुछ कमल पुष्पों की आहुति दें तो उत्तम है। पुरश्चरण 10 लाख मन्त्रों का है, मन्त्र सिद्ध होने पर सब प्रकार के शुभ मनोरथ पूर्ण होते हैं।

इस मन्त्र का पुरश्चरण दस लाख मन्त्र का है। मन्त्र छोटा है। इससे माला कम समय में हो जाती है। एक लाख का हवन न करा सकें तो दस लाख जप करना होगा। इस प्रकार कुल जप संख्या 20-21 लाख तक हो जाएगी। जिसको 41 दिन में पूरा करने के लिए 500 माला नित्य करनी होंगी। 81 दिन का करोगे तो 250 माला नित्य का हिसाब बनेगा। अपनी सुविधा के अनुसार हिसाब लगा कर उसी प्रकार 41, 81, 121 दिन का पुरश्चरण कर सकते हैं। स्थान, समय आदि के बारे में बताया जा चुका है। पुरश्चरण काल में सभी मन्त्रों में सात्विक भोजन, जमीन पर सोना, एक समय भोजन, ब्रह्मचर्य पालन आदि नियम सात्विक पूजा में अनिवार्य हैं। राजसी पूजा में भी कुछ छूट मिलती है। भोजन राजसी कर सकते हैं परन्तु ब्रह्मचर्य पालन जरूरी होता है।

विनियोग :—

अस्य श्री त्रिपुर भैरवी मन्त्रस्य, दक्षिण मूर्ति ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, त्रिपुर भैरवी देवता, वाग्भौम बीजं, शक्ति बीजं शक्ति, कामराज कीलकं, श्री त्रिपुर भैरवी प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :—

ॐ दक्षिण मूर्तये ऋषये नमः शिरसि । पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे ।
श्री त्रिपुर भैरवी देवताये नमः हृदि । वाग्भौम बीजाय नमः गुह्ये ।
शक्ति बीजं शक्तये नमः पादयोः । कामराज कीलकाय नमः नाभौ ।
विनियो गाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास :—

हस्तां अङ्गुष्ठाय नमः । हस्तीं तर्जनीभ्यां नमः ।
हस्तूं म यमाभ्यां नमः । हस्तैः अनामिकाभ्यां नमः ।
हस्तौ कनिष्ठकाभ्यां नमः । हस्तः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यास :—

हस्तां हृदयाय नमः । हस्तीं शिरसे स्वाहा ।
हस्तूं शिखायै वषट् । हस्तैः कवचाय हुम् ।
हस्तौ नेत्रत्रयाय वौषट् । हस्तः अस्त्राय फट् ।

त्रिपुर भैरवी का ध्यान

उद्यद् भानु सहस्र कान्ति मरुण क्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्त पयोधरां जप वर्ती विद्यामभीर्ति वरां ।
हस्ताब्जैर्दधती त्रिनेत्र विलसद वक्त्रारविन्दश्रियं ।
देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्देसुमन्दस्मिताम् ॥

मां के श्री अङ्गों की आभा उदय काल के सहस्रों सूर्यों के समान है । वे लाल रंग की रेशम की साड़ी पहने हुए हैं । उनके गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है । दोनों स्तनों पर रक्त-चन्दन का लेप लगा है । वे अपने करकमलों में जप मालिका, विद्या और अभय तथा वर मुद्राएं धारण किए हुए हैं । मुद्रा का अर्थ अङ्गूठी या मोहर न समझें । पूरी हथेली को खोलकर सामने करने को अभय मुद्रा, आशीर्वाद नेत्रों से मुखारविन्द की शोभा अनुपम है । उनके मस्तक पर चन्द्रमा के साथ रत्न जड़ित मुकुट भी है । कमल के आसन पर विराजमान भैरवी देवी को मैं नमस्कार करता हूँ ।

मूल मन्त्र

ॐ हस्तीं त्रिपुर भैरव्यै नमः ।

त्रिपुर भैरवी कवच

हस्तै मे शिरः पातु भैरवी भयनाशिनी ।

स्र क्लीं नेत्रे च हस्रौश्च ललाटकम् ।।
कुमारी सर्व गात्रे च वाराही उत्तरे तथा ।
पूर्वे च वैष्णवी देवी इन्द्राणी मम दक्षिणे ।।
दिग्विदिक्षु सर्वत्रैव भैरवी सर्वदावतु ।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनी ।।
आयु रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्ति च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ।।
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मी विजया त्रिपुर भैरवी ।।



About The Author

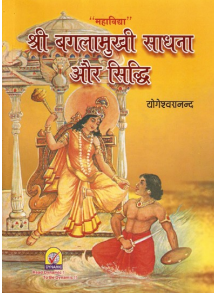
Name :- Shri Yogeshwaranand Ji

Mb :- +919917325788, +919410030994

Email :- shaktisadhna@yahoo.com

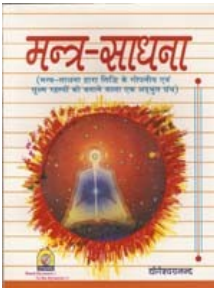
Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi



Download [Click Here](#)

2. Mantra Sadhna



Download [Click Here](#)

3. Shodashi Mahavidya



Download [Click Here](#)